राज्य अध्याय 22

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 37,38,40 व 49**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि आपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 37,38,40 व 49) में से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **(9) रोमियों 6:13**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:

(9) रोमियों 6:13। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपों, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपों।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 6:1-11**

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए रोमियों 6: 1-11 का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों 1:16 में लिखा है कि, "हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। रोमियों 3 से लेकर 5 अध्याय सिखाते हैं कि वह मसीह पर विश्वास करने वालों के लिए "छुटकारा देने या धर्मी ठहराने के वाली शक्ति है।" रोमियों अध्याय 6 सिखाता है कि वह "मसीह में विश्वासी को पवित्र बनाने की सामर्थ्य है।"

जबकि रोमियों अध्याय 5 मसीह के *कानूनी अधिकार (अर्थात उसकी स्थिति)* के बारे बताता है, अर्थात, यह कि वह सदा के लिए धर्मी ठहराया जा चुका है। रोमियों 6 मसीही जन के *नैतिक स्तर (या अवस्था)* (पवित्रीकरण की प्रक्रिया के बारे में नहीं) के बारे में बताता है, जिसका अर्थ है कि वह सदा के लिए पवित्र किया जा चुका है।

रोमियों 6:1-10 हमें सिखाता है कि "हमें क्या विश्वास करना चाहिए", जबकि रोमियों 6:11 हमें सिखाता है कि "हमें कैसे जीना चाहिए"।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिल कर रोमियों 6:1–11तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक–एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार करें या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

6:1–7

खोज 1. पौलुस का तर्क यह है कि एक मसीही के लिए पाप में बने रहना असंभव है।

रोम में, एक पक्ष, जिसे कर्मकांडवादी (व्यवस्था समर्थक) कहा जाता है, ने झूठ सिखाया की मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहरता है। विरोधी पक्ष, जिसे व्यवस्थाहीन (व्यवस्था विरोधी) कहा जाता है, ने झूठ सिखाया की एक व्यक्ति जो धर्मी ठहर चुका, उसे व्यवस्था के अनुसार जीने की कोई आवश्यकता नहीं; वह पाप में रखना जारी रख सकता है।

प्रेरित पौलुस ने दोनों झूठी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया। कर्मकांडवादी लोगों के विरूद्ध, पौलुस ने सिखाया कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं, बल्कि अनुग्रह के द्वारा मसीह यीशु में विश्वास से धर्मी ठहरता है। व्यवस्थाहीन लोगों के विरूद्ध, उसने सिखाया कि, एक व्यक्ति जो अनुग्रह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहर चुका है उसे (नैतिक) व्यवस्था[1] के अनुसार जीना चाहिए।

पौलुस ने सिखाया कि व्यवस्था उद्धार का *माध्यम* नहीं है, लेकिन यह वह *मानक* है जिसके अनुसार धर्मी (उद्धार पाए हुए) लोगों को जीना चाहिए।

(1) रोमियों 6:1–2 सिखाता है कि व्यवस्थाहीनों का सिद्धांत एक विरोधाभास है।

पौलुस का कहना है कि यह इसके विरूद्ध है कि एक व्यक्ति को पापों से छूटने के लिए मसीह के पास आना चाहिए, पापों में जीना जारी रखने के लिए।

(2) रोमियों 6:3–4 सिखाता है कि मसीही यीशु के साथ उसकी मृत्यु में एकजुट हैं और इसलिए पापों की सामर्थ्य के लिए मर गए हैं।

अपने तर्क में, पौलुस ने मसीही बपतिस्मे की अपील की। वह कहता है कि, जिन लोगों ने मसीह का बपतिस्मा (पवित्र आत्मा के साथ)[2] पाया है, वे मसीह की मृत्यु में उसके साथ एकजुट हो गए हैं। इसप्रकार, जबकि मसीह ''*पापों के लिए* मरा (एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में)'', मसीही ''पापों के लिए मरे''।

---

[1] नैतिक व्यवस्था, उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ।

[2] इसे पानी के बपतिस्मे के रूप में संदर्भित नहीं किया जा सकता, क्योंकि लोग का नया जन्म् उससे नहीं होता जो वे स्वयं करते हैं (पानी का बपतिस्मा) – केवल उससे जो परमेश्वर करते हैं (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) (यूहन्ना 1:13)

एक बार–सब के लिए पापों से छुटकारे की यह निश्चितता, मसीही की पहचान है! एक मसीही के लिए पापों से छुटकार हैः

- पाप के *दण्ड* से छुटकारा (पापी को *धर्मी ठहराया गया,* धर्मी बनाया गया)
- पाप की सामर्थ्य से छुटकारा (पापी को *शुद्ध किया गया,* पवित्र बनाया गया)। ''यीशु मसीह हमारी धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा है'' (1कुरिन्थियों 1:30)!
  प्रत्येक मसीही, मसीह के साथ उसकी मृत्यु में एकजुट है, पापों की समार्थ्य के प्रति मरा है! वह अब पाप का दास नहीं है।
- इसलिए, एक व्यक्ति जो कि मसीही बन चुका है, वह पाप में जीवन नहीं जी सकता।
- और इसलिए एक व्यक्ति जो लागातार पाप में जीवन जीना जारी रखता है, वह एक मसीही नहीं हो सकता (1यूहन्ना 3:6–9)!

(3) रोमियों 6:5–7 सिखाता है कि मसीही, मसीह के पुनरूत्थान में एकजुट हैं और इसलिए नया जीवन जीना *चाहते हैं,* जी *सकते हैं और जीयेंगे*।

अपने तर्क में पौलुस मसीह के पुनरूत्थान की अपील करता है। वह कहता है कि जो लोग मसीह के साथ उसकी मृत्यु की समानता में एकजुट हो गए हैं, वे उसके पुनरूत्थान में भी एकजुट हो जाएंगे। मसीह की मृत्यु और पुरनरूत्थान में एक कारणात्मक संबंध है। जैसा कि निश्चित है कि उसके पुनरूत्थान द्वारा उसकी मृत्यु का अनुसरण किया जाएगा, वैसे ही एक नए और पवित्र जीवन के द्वारा एक मसीही की दोष और पाप की सामर्थ्य के प्रति मृत्यु का अनुसरण किया जाएगा।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान विश्वासी को *धार्मिकता का कानूनी स्तर* और *पवित्रता का नैतिक स्तर* प्रदान करता है। एक विश्वासी यीशु मसीह के पुनरूत्थान में सहभागी होने के लिए उसकी मृत्यु में भी सहभागी होता है। मसीही लोग यीशु मसीह के पुनरूत्थान के आनंद का लाभ उठाए बगैर मसीह की मृत्यु के लाभ का आनंद नहीं उठा सकते। पवित्र (शुद्ध) होने के लिए, पहले परमेश्वर को उन्हें धर्मी ठहराना होगा। लोग बिना धर्मी (क्षमा किए गए) ठहराए, पवित्र (शुद्ध) नहीं बन सकते! बाइबल में धार्मिकता की कानूनी स्थिति (धर्मी ठहरने के नाते, क्षमा किए गए) और पवित्रता की नैतिक स्थिति (पापों से शुद्ध होने के नाते) अविभाज्य है! (वचन 5 और 8 में भविष्यकाल, भविष्य को नहीं बल्कि निश्चितता को व्यक्त करता है!)

6:8–11

खोज 2. पौलुस का तर्क है कि मसीही निश्चित रूप से बदले गए हैं।

इस लेखांश में, पौलुस अपने तर्क का निष्कर्ष निकालता है। यीशु मसीह इतिहास में एक बार सब के लिए मरे और उनकी मृत्यु को कभी दोहराया नहीं जाएगा। अपने पुनरूत्थित मानव स्वभाव में अब वह परमेश्वर को समर्पित जीवन जीते हैं।

इसी प्रकार, एक मसीही इतिहास में एक बार हमेशा के लिए पापों की सामर्थ्य के प्रति मर गया और अब परमेश्वर के प्रति समर्पित जीवन जीने में सक्षम है। पाप की सामर्थ्य से मसीही को अलग करना अंतिम है और उसकी नया और पवित्र जीवन जीने की योग्याता निश्चित है। ''मसीह के साथ मर गए'' के इतिहास में एक बार–हमेशा के लिए की यह दृढ़ घटना दर्शाती है कि उसकी ''पाप की

सामर्थ्य के प्रति मृत्यु'' एक स्थिर अवस्था या स्थिति है। इसी प्रकार, ''मसीह के साथ जीलाए गए'' के इतिहास में एक बार–हमेशा के लिए की यह घटना दर्शाती है कि उसका ''परमेश्वर के लिए जीवित होना'' भी एक स्थिर अवस्था या स्थिति है। एक मसीही का जीवन अब दोषी (नाश) ठहरने के लिए, भ्रष्ट होने या हमे दास बनाने के लिए पाप की सामर्थ्य के द्वारा नियत्रिंत या प्रतिबंधित नहीं है। मसीही अब न तो अपने पुराने पापमय स्वभाव के द्वारा नियत्रिंत या अनुबंधित हैं न ही उन पापमय कार्यों के द्वारा जो उन्होंने अपने शरीर के द्वारा किए हैं।

''पाप की समार्थ्य के लिए मृत होना'' और ''मसीह की आज्ञाकारिता में नए जीवन जीने की क्षमता'' की इस स्थिति को ''पवित्रता'' कहा जाता है। पवित्रता की यह स्थिति उन पापों के द्वारा नष्ट नहीं होती जो एक मसीही भविष्य में करता है। जिस प्रकार मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान उनके लिए *एक बार में हमेशा के लिए* था उसी प्रकार उन लोगों के लिए जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, धार्मिकता और पवित्रता की स्थिति प्राप्त करना, एक बार में हमेशा के लिए हैं! रोमियों 6:11 में, पौलुस आज्ञा देता है,

''अपने आप को पापों के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह में जीवित समझो''।

ध्यान दें कि मसीहियों को पाप के लिए मृत होने या परमेश्वर के लिए जीवित रहने की आज्ञा नहीं दी गई, क्योंकि यह माना जाता है कि मसीही *पहले से ही* पाप के लिए *मर चुके हैं* और *पहले से ही* परमेश्वर के लिए *जीवित हैं!* ध्यान दें कि इन चीजों को तथ्य गिनने (विश्वास करने) के द्वारा यह चीजें तथ्य नहीं होंगी, क्योंकि इसकी घोषणा *पहले ही* की जा चुकी हैं कि ये *तथ्य हैं!* यह तथ्य है कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान में उनके साथ एकजुट हो चुके हैं (2000 साल पहले)! इसलिए यह भी एक तथ्य है कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे पहले से धर्मी (क्षमा किए गए) ठहराए गए और पवित्र किए गए हैं। वे पाप की सामर्थ्य के प्रति दोषी ठहरने (नाश), अशुद्ध होने और दास बनने के प्रति मर चुके हैं और परमेश्वर के लिए एक पवित्र और नया जीवन जीने में सक्षम हैं। पौलुस मसीहियों को आज्ञा देता है कि विश्वास करें की उनकी धार्मिकता की स्थिति और पवित्रता की स्थिति तथ्य है और इन तथ्यों की सराहना करें!

कदम 3.प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 6:1–11 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

6:1

प्रश्न 1. **वे लोग कौन थे जो यह मानते थे कि मसीही लोग पाप करते रह सकते है?**

ध्यान दें। रोमियों 5 का समापन इस कथन के साथ होता है ''व्यवस्था बीच में आ गई की अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ'' (रोमियों 5:20)। लोगों के एक विशेष समूह ने इससे एक गलत सिद्धांत विकसित किया। उन्होंने झूठ सिखाया कि, ''परमेश्वर ने व्यवस्था इस उद्देश्य से दी की लोगों को पाप अधिक करना चाहिए; और जितना अधिक लोग पाप करेंगे उतना अधिक परमेश्वर इन पापियों के प्रति अनुग्रह दिखाएंगे और परमेश्वर की महिमा होगी।'' इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकालाः ''लोगों को लगातार पाप करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''आओ हम पाप करना जारी रखें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़े!'' जाहिर है कि यह शिक्षा निश्चित रूप से झूठी शिक्षा है। जिन लोगों ने बाइबल के अनुग्रह के सिद्धांता को नष्ट किया उन्हें व्यवस्थाहीन कहा गया (वे लोग जो व्यवस्था के विरोध में हैं)।

(1) व्यवस्थाहीनों ने परमेश्वर के काम पर जोर दिया,
लेकिन मनुष्यों की जिम्मेदारी को नजरअंदाज कर दिया।

उन्होंने मसीह के पूर्ण किए गए कार्य पर इस हद तक जोर दिया कि लोगों की पश्चयाताप करने, नया जन्म् पाने और शुद्धिकरण की आवश्यकता को अस्वीकार कर दिया। यद्पि यह सत्य है कि मसीह ने मसीहियों के लिए छुटकारे के कार्य को पूर्ण किया है, लेकिन यह सत्य नहीं है कि मसीहियों को उद्धार पाने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।

(2) व्यवस्थाहीनों ने परमेश्वर के अनुग्रह पर इस हद तक जोर दिया
कि परमेश्वर की व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया।

उन्होंने गलत विश्वास किया कि मसीही केवल ''अनुग्रह के अधीन'' हैं और इसलिए उन्हें व्यवस्था कि कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने झूठी शिक्षा दी कि जिन भले कामों को करने के लिए व्यवस्था आज्ञा देती है, वे मसीहियों को करने की आवश्यकता नहीं। साथ ही उन्होंने यह भी झूठी शिक्षा दी कि मसीहियों के बुरे काम जिनके लिए व्यवस्था माना करती हैं वे अनुग्रह से नजरअंदाज़ कर दिये जाएंगे। व्यवस्थाहीनों ने गलत तरीके से विश्वास किया कि मसीहियों के सभी बुरे काम उनके ''पुराने स्वभाव'' से संबंधित हैं, जो उद्धार का वारिस नहीं होगा। इसलिए उन्होंने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ा की मसीही अपने शरीरों के द्वारा क्या करते हैं।

व्यवस्थाहीनों की गलत शिक्षा (अनुग्रह के सिंद्धात की विकृति) के विरोध में पौलुस का तर्क यह है कि यीशु मसीह द्वारा उद्धार की *प्राप्ति* यीशु मसीह द्वारा उद्धार के *लागूकरण* को निष्काषित नहीं करती। यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी बलिदानपूर्ण मृत्यु द्वारा उद्धार प्राप्त किया। हालाँकि, वे इस प्राप्त उद्धार को लोगों पर पवित्र आत्मा द्वारा उनके नए जन्म् और नवीनीकरण द्वारा (तीतुस 3:5), पश्चयाताप और सुसमाचार पर उनके विश्वास (मरकुस 1:15) और नैतिक व्यवस्था के प्रति उनकी आज्ञाकारिता (यूहन्ना 14:21,23) के द्वारा लागू करते हैं। पौलुस तर्क देता है कि धार्मिकता को पवित्रता से और धर्मी ठरहने को शुद्धिकरण से अगल नहीं किया जा सकता! धर्मी ठरने की कानूनी स्थिति और पवित्रता की नैतिक स्थिति एक साथ अविभाज्य हैं। एक व्यक्ति जो यीशु मसीह की मृत्यु का लाभ उठाता है, वह यीशु मसीह के पुरनरूत्थान का भी लाभ उठाता है। धर्मी ठहरने या उद्धार को कभी भी नए और पवित्र जीवन जीने से अलग नहीं किया जा सकता!

6:3–4

प्रश्न 2. **मसीही बपतिस्में का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। रोमियों 6:1-7 *पानी के* बपतिस्में की बात नहीं करता, बल्कि *पवित्र आत्मा के* बपतिस्में की बात करता है! यह पानी के बपतिस्में की *विधि* के बारे में नहीं सिखाता, लेकिन आत्मा के बपतिस्में का *अर्थ* सिखाता है!

रोमियों 6:3, ''मसीह में बपतिस्मा'' मसीह के साथ *एकजुट* होने, मसीह *के साथ संगति* और मसीह में सभी विशेषाधिकारों में *सहभागिता* को दर्शाता है। मसीह के साथ यह एकता मसीह के द्वारा आत्मा के बपतिस्में द्वारा स्थापित की गई है (मरकुस 1:8) और किसी मनुष्य (इ.जी. ए पासबांन) द्वारा पानी के बपतिस्में से नहीं (मरकुस 1:8)। पानी का बपतिस्मा केवल एक प्रतीक है आत्मा के बपतिस्में का (प्रेरितों 10:47-48)।

रोमियों 6 में बपतिस्मा (आत्मा का) विशेष रूप से मसीह के साथ उनकी मृत्यु में एकजुट होने और उनकी मृत्यु के सभी लाभों मे भागिदारी का प्रतीक है। यह समीह जो कुछ है और एक मध्यस्थ के रूप में उद्धार के उनके कार्य के सभी चरणों में उनके साथ हमारी एकता का प्रतीक है। स्वयं मसीह के साथ हमारी एकता को उनके द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य से अलग नहीं किया जा सकता और उनकी मृत्यु में उनके साथ एकजुट होने को उनके पुनरूत्थान में उनके साथ एकजुट होने से अलग नहीं किया जा सकता।

(1) उनकी मृत्यु में एकजुट होना।

रोमियों 6:3-4 और कुलुस्सियों 2:12 सिखाते हैं कि मसीही जिन्होंने ''मसीह का बपतिस्मा (आत्मा के द्वारा) लिया है'' उन्होंने ''उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है''। मसीह के साथ उनका ''गाड़ा जाना'' इस बात का प्रमाण है कि वे वास्तव में मर चुके हैं (यह केवल मृत्यु का रूप नहीं था)। जबकि आत्मा का बपतिस्मा (अर्थात, पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म्) आत्मिक रूप से विश्वासी को 2000 साल पूर्व मसीह की मृत्यु के साथ एकजुट करता है, वहीं पानी का बपतिस्मा मसीह के साथ उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान में विश्वासी की आत्मिक एकता को प्रदर्शित (दर्शाता) करता है। रोमियो 6:3-4 में क्रियाओं के काल (यूनानीः एओरिस्ट काल) दर्शाते हैं कि मसीही *एक बार में हमेशा के लिए* आत्मिक रूप से मर गए और अपने पिछले इतिहास में गाड़े गए हैं (पुराने मनुष्य को फिर से नहीं खोदना चाहिए)! मसीही पाप के दायरे, पापमय संसार और शैतान के राज्य से उतने ही प्रभावशाली रूप से बाहर हैं, जितना की कब्र में पड़ा हुआ एक मृत व्यक्ति पृथ्वी पर मानव जीवन से बाहर होता है। मसीही एक बार में हमेशा के लिए धर्मी ठहराए (क्षमा किए) गए हैं। रोमियों 6:5 में क्रिया का पूर्ण काल (यूनानीः जिओगामेनेन) यह दर्शाता है कि यह धर्मी ठहरना (क्षमा) एक स्थायी या वर्तमान में चल रही वास्तविकता है!

(2) उनके पुनरूत्थान में एकजुट होना।

रोमियों 6:5 सिखाता है कि मसीही लोग यीशु मसीह के पुनरूत्थान में भी निश्चित रूप से उनके साथ एकजुट हुए हैं। पुनरूत्थान पहले तो इस पृथ्वी पर वर्तमान पुनरूत्थित जीवन को संदर्भित करता है और दूसरा यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय देह के पुनरूत्थान को। रोमियों 6:5 का तर्क यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने में आत्मिक एकता को यीशु मसीह के पुनरूत्थान के साथ आत्मिक एकता से अलग नहीं किया जा सकता। पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म् (और यीशु मसीह में विश्वास) मसीहियों को आत्मिक रूप से 2000 साल पूर्व यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने से जोड़ता है और परिणामस्वरूप विश्वासियों को धर्मी बनता है। इसी प्रकार,

पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म् (और यीशु मसीह में विश्वास) मसीहियों को आत्मिक रूप से 2000 साल पूर्व यीशु मसीह के पुनरूत्थान से जोड़ता है और परिणामस्वरूप विश्वासियों को पवित्र बनाता है!

प्रत्येक मसीही 2000 साल पूर्व यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए (अधिगृहीत, पूरा किए गए) उद्धार के कार्य के आधार पर और पवित्र आत्मा द्वारा इसके लागूकरण से यहाँ और अभी अपने जीवन में ''एक संत'' है। पाप के प्रयश्चित बलिदान के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु धर्मिकता (धर्मी ठहरने) कि स्थिति के लिए आवश्यक और निश्चित है। इस प्रकार, यीशु मसीह का पुनरूत्थित जीवन पवित्रता की स्थिति (और निम्नलिखित शुद्धिकरण) के लिए आवश्यक और निश्चित है।

मसीहियों को परमेश्वर द्वारा पहले ही ''पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र'' समझा जाता है।
मसीह में *उनका स्थान या स्थिति* धार्मिकता और पवित्रता (उनके स्थान पर यीशु मसीह द्वारा पूर्ण की गई) है।
मसीही एक पवित्र जीवन में यहाँ और अभी इस पृथ्वी पर अधिक से अधिक यीशु के अनुरूप *होंगे*।
उनकी निरंतर पवित्रता मसीह में एक *प्रक्रिया या (जीवन) शैली* है।
यीशु मसीह के दूसरे आगमन में मसीही आत्मा और देह में पूर्ण रूप से यीशु के समान होंगे।
उनकी अंतिम महिमा मसीह में *उनकी अंतिम मंजिल* है।

रोमियों 6 में पूरी चर्चा धर्मी ठहरने की (कानूनी) स्थिति और पवित्रता की (नैतिक) स्थिति के बीच आवश्यक संबंध के चारों ओर घूमती है।

6:6

प्रश्न 3. ''पुराने मनुष्यत्व'' और ''नए मनुष्यत्व'' में क्या अंतर है?

ध्यान दें। मसीहियों को इन शब्दों के बीच फर्क पता होना चाहिएः ''पुराना मनुष्यत्व'', ''पापमय स्वभाव'' और ''बाहरी मनुष्यत्व''।

(1) पुराना मनुष्यत्व निश्चित रूप से मर चुका है और नया मनुष्यत्व अब एक वास्तविकता है।
''पुराना मनुष्यत्व'' ''अधर्मी प्रवृत्ति'' का प्रतिनिधित्व करता है (रोमियों 6:6)। यह ''स्वभाविक मनुष्यत्व'' है जिसने पापमय स्वभाव का दास बने रहने का चुनाव किया (रोमियो 6:16) और इसलिए पूर्ण रूप से पापमय स्वभाव के द्वारा शासित हुआ (रोमियों 8:6-8)। ''नया मनुष्यत्व'' मसीही के ''नया जन्म् पाए स्वभाव'' का प्रतिनिधित्व करता है।
यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा पुरान स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *क्रूस पर चढ़ा दिया गया* (रोमियों 6:6; गलातियों 2:20) और उनका नया स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए आत्मिक मृत्यु से *जी उठा* (रोमियों 6:4-5)। फिर पुराना स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *उतार दिया गया* (इफिसियों 4:22) और नया स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *पहन लिया गया* (4:24)! पुराने मनुष्यत्व को उतार दिया गया जब नया मनुष्य पहना गया (कुलुस्सियों 3:9-10)। वे एक समय पर एक साथ मौजूद नहीं हो सकते!

(2) हालाँकि, नए मनुष्यत्व में अभी भी एक पापी स्वभाव है।
जबकि गैर-मसीही पापमय स्वभाव के प्रभुत्व और दासत्व की सामर्थ्य से स्वतंत्र नहीं हैं, मसीही एक बार में हमेशा के लिए पापमय स्वभाव के प्रभुत्व और दासत्व की सामर्थ्य से स्वतंत्र किए गए हैं।

फिर भी, ''उनका पापमय स्वभाव'' उनके जीवन में वर्तमान और शक्तिशाली सामर्थ्य बना रहता है (रोमियों 6:7, 7:18; 8:2) और नए मनुष्यत्व में रहने वाले पवित्र आत्मा के साथ लगातार संघर्ष करता है (रोमियों 6:13,19; गलातियों 5:16-23)।

वास्तविक मसीही बार-बार पवित्र आत्मा के द्वारा नियत्रिंत होने का चुनाव करते हैं अपने पापमय स्वभाव के द्वारा नहीं (रोमियों 8:9,13)। वह बार-बार पापमय संसार के अनुरूप होने का विरोध करता है और मसीह की समानता में बदलने का चुनाव करता है। इस तरह से नया मनुष्यत्व आत्मिक रूप से बढ़ता जाता है (रोमियों 12:1-2)। इस लगातार नवीनीकरण का उद्देश्य और स्तर यीशु मसीह और यीशु मसीह की समानता है (इफिसियों 4:13-14), नया मनुष्यत्व लगातार परमेश्वर के स्वरूप में नवीनीकृत होता रहता है (कुलुस्सियों 3:10)।

(3) नए मनुष्यत्व को बाहरी मनुष्यत्व और नए अनंरूनी मनुष्यत्व के रूप में पहचाना जा सकता है।

मनुष्य के बाहरी स्वरूप को ''बाहरी मनुष्यत्व'' कहा जाता है और उसके अंदरूनी जन को ''अंदरूनी मनुष्यत्व'' कहा जाता है। ''जबकि बाहरी रूप से (बाहरी मनुष्यत्व) हम नष्ट होते जाते हैं (हम बुढ़े और कमजोर होते जाते हैं), फिर भी अंदरूनी रूप से (अंदरूनी मनुष्यत्व) हम दिन प्रतिदिन नए होते जाते हैं'' (2कुरिन्थियों 4:16)।

''बाहरी मनुष्यत्व''''मिट्टी का बर्तन'' है (2कुरिन्थियों 4:7), ''नाशवान देह'' (2कुरिन्थ्यिों 4:10-11), पुरान अनवीनीकृत मनुष्यत्व नहीं। यह संपूर्ण मानव संरचना है अपनी सभी ऊजाओं और संकायों के साथ, मानसिक और शारीरिक दोनों, ज्ञानविषयक और प्रायौगिक दोनों के साथ जो नष्ट होता जा रहा है और कब्र की ओर बढ़ रहा है। सतत् वर्तमानकाल सर्केत करता है कि यह नष्ट होना एक स्थिर और अपरिवर्तनीय प्रक्रिया है। ''बाहरी मनुष्यत्व'' वह ''नया मनुष्यत्व'' है जो कि बाहरी रूप से प्रगट और लोगों के लिए दृश्यमान है।

''अंदरूनी मनुष्यत्व'' मसीही हृदय है जिसमें परमेश्वर का प्राकाश चमकता है, जिससे उसे मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा का वास्तविक और अनुभवात्वक ज्ञान प्राप्त होता है'' (2कुरिन्थ्यिों 4:6)। अंदरूनी मनुष्यत्व मसीही हृदय है जिसमें पवित्र आत्मा वास करता है जो परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने की गारंटी के लिए बयाना है'' (2कुरिन्थियों 1:22; 5:5)। अंदरूनी मनुष्यत्व में पवित्र आत्मा ने नए जीवन के सिद्धांतों को डाला दिया; वहाँ वह अपने नियंत्रित करने वाले प्रभाव को काम में लाता है और वहाँ वह सभी मसीही गुणों में बढ़ने की सामर्थ्य डालता है (इफिसियों 3:16-17)। अंदरूनी मनुष्यत्व संसार के लोगों की दृष्टि से और उनके दुर्गम विशलेषण से छिपा है। नए जन्म् के बाद, मसीही अभी भी एक अविभाज्य व्यक्तित्व है (अर्थात, एक जीवित प्राणी / एक अर्दश्य मानव आत्मा और दृश्यमान मावन देह के साथ एक प्राण) जिसे मनुष्य बाहर से और परमेश्वर भीतर से देख सकते हैं। पौलुस <u>महान मसीही सत्य</u> की बात कर रहा है कि <u>बाहरी दृश्यमान मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन अंदरूनी नवीनीकरण के अनुभव के साथ नष्ट होता जाता है (2कुरिन्थियों 4:16)!</u>

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक–दूसरे के साथ विचार–मंथन करें और रोमियों 6:1–11 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग–अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 6:1–11 से संभावित लागूकरण के उदाहरण।

6:1. अपनी पापमय आदतों के बारे में सोचें। इन पापमय आदतों से छूटने की कोशिश करें और पाप करना जारी न रखें।

6:3–4. पहचानें की जब आपने यीशु मसीह में विश्वास किया है तो अब आप पाप के दासत्व की सामर्थ्य के अधीन नहीं हैं। यदि आप चाहें तो आप पापमय विचारों, शब्दों, कार्यों, आदतों और चरित्र लक्षणों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

6:3–4. अपने मसीही बपतिस्मे का अर्थ स्पष्ट रूप से समझें। समीही बपतिस्मा सब से ऊपर है "आत्मा का अदृश्य बपतिस्मा" (मरकुस 1:8; प्रेरितों 11:14–18; 1कुरिन्थियों 12:13; तीतुस 3:4–8) जिसका प्रतीक "पानी का दृश्यमान बपतिस्मा" है (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 10:47–48; प्रेरितों 22:16)। मसीही बपतिस्मे (आत्मा के साथ) का अर्थ है मसीह के साथ एकजुट होना, मसीह के साथ संगति और भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल में उनके उद्धार के कार्य में सहभागी होना। यह विशेषरूप से हमारे स्थान पर उनकी मृत्यु में भागिदारी का प्रतीक है, अर्थात, आपके पाप धुल गए हैं (प्रेरितों 22:16)। इसका अर्थ है कि आप क्षामा किए गए हैं (प्रेरितों 2:38) और आप धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 6:7)।

याद रखें कि ये चीजें किसी मनुष्य द्वारा पानी के बपतिस्मे द्वारा नहीं (पासबांन द्वारा किए गए अनुष्ठानिक रिवाज), लेकिन केवल मसीह के द्वारा आत्मा के बपतिस्मे (वास्तविक नया जन्म्) के द्वारा पूरी की गई हैं! रोमियों 6:3–7 पानी के बपतिस्मे की बात नहीं करता साथ ही पानी के बपतिस्मे की विधि के बारे में भी नहीं (उदाहरण के लिए, डुबाने के द्वारा)। यह आत्मा के बपतिस्मे की बात करता है जिसे बाइबल में हमेशा ऊपर से और विश्वासियों के ऊपर आत्मा के ऊंडेले जाने के रूप में चित्रित किया गया है (प्रेरितों 2:3; 2:17,33; 2:38; 10:44; 11:16)। और पानी के बपतिस्मे को "उन्हें पानी देना (ऊपर उसे ऊंडेलना और ऊपर डालना) (2राजा 3:11), जिससे उनके पाप धुल जाते हैं" (प्रेरितों 22:16) के रूप में चित्रित किया गया है।

6:5–6 यह समझें कि धर्मी ठहरने की कानूनी स्थिति को पवित्रता की नैतिक स्थिति से अलग नहीं किया जा सकता। जब एक मसीही, मसीह की मृत्यु में सहभागी हो जाता है तो वह उनके पुनरूत्थान में भी सहभागी हो जाता है। इसलिए एक मसीही को मसीह के लिए नया जीवन जीना चाहिए।

6:10–11 आपना नया जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीएं।

2. रोमियों 6:1–11 से व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं स्वयं को पाप की सामर्थ्य के प्रति मृत और परमेश्वर के लिए जीवत समझना चाहता हूँ। मैं आपने आप को इस तथ्य में प्रसन्न करता हूँ कि मेरे पापमय स्वभाव की सामर्थ्य टूट गई है और मैं पाप की नियमित गुलामी से स्वतंत्र हूँ। मैं इस तथ्य को याद रखाना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर के लिए जीवित हूँ और यह कि मुझे न केवल एक नया और पवित्र जीवन जीना *चाहिए,* बल्कि मैं जी *सकता* हूँ और *जीऊँगा।*

मैं याद रखना चाहता हूँ कि मसीही न केवल मसीह की मृत्यु के लाभों में, बल्कि उनके पुनरूत्थान के सभी लाभों में भी सहभागी होते हैं! मसीह के साथ मेरी आत्मिक मृत्यु का परिणाम मेरे पापी स्वभाव की सामर्थ्य का पूर्ण रूप से टूटना है। रोमियों 6:7 के अनुसार, मेरे पापमय स्वभाव को पहले ही मृत्यु की सजा सुना दी गई है और मेरे जीवन भर इस न्याय का संचालन होता रहेगा। मुझ में पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा मेरे पापमय स्वभाव की सामर्थ्य को बार–बार तोड़ा जाता है और बार–बार मुझे नया और पवित्र जीवन जीने की योग्यता प्रदान की जाती है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 6:1–11 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1–11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 50,51,58 व 62** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(10) रोमियों 6:23।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।

5. शिक्षा देना। मत्ती 18:23-35 में निहित **"निर्दयी सेवक" के दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।